साम्प्रदायिक दंगे और उनका इलाज...

पेज तीन का शेष

जरूर होता है। कार्ल मार्क्स के तीन बड़े सिद्धान्तों में से यह एक मुख्य सिद्धान्त है। इसी सिद्धान्त के कारण ही तबलीग, तनकीम, शुद्धि आदि संगठन शुरू हुए और इसी कारण से आज हमारी ऐसी दुर्दशा हुई, जो अवर्णनीय है। बस, सभी दंगों का इलाज यदि कोई हो सकता है तो वह भारत की आर्थिक दशा में सुधार से ही हो सकता है दरअसल भारत के आम लोगों की आर्थिक दशा इतनी खराब है कि एक व्यक्ति दूसरे को चवन्नी देकर किसी और को अपमानित करवा सकता है। भूख और दुख से आतुर होकर मनुष्य सभी सिद्धान्त ताक पर रख देता है। सच है, मरता क्या न करता।

लेकिन वर्तमान स्थिति में आर्थिक सुधार होना अत्यन्त कठिन है, क्योंकि सरकार विदेशी है और लोगों की स्थिति को सुधरने नहीं देती। इसीलिए लोगों को हाथ धोकर इसके पीछे पड़ जाना चाहिये और जब तक सरकार बदल न जाये, चैन की सांस न लेना चाहिए। लोगों को परस्पर लड़ने से रोकने के लिए वर्ग-चेतना की जरूरत है। गरीब, मेहनतकशों व किसानों को स्पष्ट समझा देना चाहिए कि तुम्हारे असली दुश्मन पूंजीपति हैं। इसलिए तुम्हें इनके हथकंडों से बचकर रहना चाहिए और इनके हत्थे चढ़ कुछ न करना चाहिए। संसार के सभी गरीबों के चाहे वे किसी भी जाति, रंग, धर्म या राष्ट्र के हों, अधिकार एक ही हैं। तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम धर्म, रंग, नस्ल और राष्ट्रीयता व देश के भेदभाव मिटाकर एकजुट हो जाओ और सरकार की ताकत अपने हाथों में लेने का प्रयत्न करो। इन यत्नों से तुम्हारा नुकसान कुछ नहीं होगा इससे किसी दिन तुम्हारी जंजीरें कट जाएंगी और तुम्हें आर्थिक स्वतंत्रता मिलेगी।

जो लोग रूस का इतिहास जानते हैं, उन्हें मालूम है कि जार के समय वहां भी ऐसी ही स्थितियां थीं वहां भी कितने ही समुदाय थे जो परस्पर जूत-पतांग करते रहते थे। लेकिन जिस दिन से वहां श्रमिक-शासन हुआ है, वहां नक्शा ही बदल गया है। अब वहां कभी दंगे नहीं हुए। अब वहां सभी को 'इन्सान' समझा जाता है, 'धर्मजन' नहीं। जार के समय लोगों की आर्थिक दशा बहुत ही खराब थी इसलिए सब दंगे-फसाद होते थे। लेकिन अब रूसियों की आर्थिक दशा सुधर गयी है और उनमें वर्ग-चेतना आ गयी है इसलिए अब वहां से कभी किसी दंगे की खबर नहीं आयी। इन दंगों में वैसे तो बड़े निराशाजनक समाचार सुनने में आते हैं, यह खुशी का समाचार हमारे कानों को मिला है कि भारत के नवयुवक अब वैसे धर्मों से जो परस्पर लड़ाना व घृणा करना सिखाते हैं, तंग आकर हाथ धो रहे हैं। उनमें इतना खुलापन आ गया है कि वे भारत के लोगों को धर्म की नजर से-हिन्दू, मुसलमान या सिख रूप में नहीं, वरन् सभी को पहले इन्सान समझते हैं, फिर भारतवासी। भारत के युवकों में इन विचारों के पैदा होने से पता चलता है कि भारत का भविष्य सुनहला है। भारतवासियों को इन दंगों आदि को देखकर घबराना नहीं चाहिए। उन्हें यत्न करना चाहिए कि ऐसा वातावरण ही न बने, और दंगे हों ही नहीं।

1914-15 के शहीदों ने धर्म को राजनीति से अलग कर दिया था। वे समझते थे कि धर्म व्यक्ति का व्यक्तिगत मामला है इसमें दूसरे का कोई दखल नहीं। न ही इसे राजनीति में घुसाना चाहिए क्योंकि यह सरबत को मिलकर एक जगह काम नहीं करने देता। इसलिए गदर पार्टी जैसे आन्दोलन एकजुट व एकजान रहे, जिसमें सिख बढ़-चढ़कर फांसियों पर चढ़े और हिन्दू मुसलमान भी पीछे नहीं रहे।

इस समय कुछ भारतीय नेता भी मैदान में उतरे हैं जो धर्म को राजनीति से अलग करना चाहते हैं। झगड़ा मिटाने का यह भी एक सुन्दर इलाज है और हम इसका समर्थन करते हैं। यदि धर्म को अलग कर दिया जाये तो राजनीति पर हम सभी इकट्ठे हो सकते है। धर्मों में हम चाहे अलग-अलग ही रहें हमारा ख्याल है कि भारत के सच्चे हमदर्द हमारे बताये इलाज पर जरूर विचार करेंगे और भारत का इस समय जो आत्मघात हो रहा है, उससे हमे बचा लेंगे।

शहीद-ए-आजम भगत सिंह की मूर्ति का अनावरण

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) मुजेसर फाटक से शुरू होकर बल्लभगढ़ तक, रेलवे पटरी के पश्चिम में फैली, आज़ाद नगर मज़दूर बस्ती में, शहीद-ए-आजम भगतसिंह के जन्म दिन 28 सितम्बर को सुबह से ही चहल-पहल थी. लोग गर्व से चर्चा कर रहे थे, क्रांतिकारी मज़दूर मोर्चा की रहनुमाई में, उन्हीं के सहयोग से, उनके मोहल्ले में, देश के असली हीरो, शहीद- ए-आज़म की मूर्ति के अनावरण का कार्यक्रम शाम 5:30 होना था. जहां मूर्ति प्रस्थापित हुई थी, उस छोटे से चौक का नाम भी, बस्ती के साथियों ने, 'शहीद भगतसिंह चौक' रखा था. शाम को निर्धारित समय से पहले ही, बड़ी तादाद में स्त्री- पुरुष एवं बच्चे, हाथों में लाल झंडे लिए और गले में भगतसिंह के विचारों की तख्तियां लटकाए इकट्ठे होने शुरू हो गए. आज़ाद नगर के लगभग सबसे पुराने मज़दूर और एटक के जुझारू कार्यकर्ता, कॉमरेड हरी शंकर शाह ने, ज़ोरदार नारों और तालियों की गड़गड़ाहट के बीच मूर्ति का अनावरण किया.

संगठन के अध्यक्ष कॉमरेड नरेश तथा महासचिव कामरेड सत्यवीर सिंह ने, शहीद- ए-आज़म भगतसिंह एवं उनके कामरेडों की क़ुर्बानी, उनके विचारों तथा आज़ादी की गौरवशाली क्रांतिकारी विचारधारा को याद रखने, उसे ज़ारी रखने के महत्त्व पर प्रकाश डाला. आज़ादी की लड़ाई लड़ रहे, ये क्रांतिकारी, अंग्रेजों के साथ-साथ, मज़दूरों के निर्मम शोषण-उत्पीड़न पर टिकी, उस औपनिवेशिक-सामंती व्यवस्था को भी उखाड़ फेंकना चाहते थे, जिससे गोर अंग्रेज़ों की जगह, देसी-भूरे अंग्रेज़, पहले टाटा-बिड़ला और बाद में अडानी-अंबानी ना लेने पाएं. वे चाहते थे कि सोवियत संघ की तरह भारत भी एक समाजवादी गणराज्य बने. सत्ता मेहनतक़श किसानों और मज़दूरों के हाथ आए. बदकिस्मती से, क्रांतिकारी धारा विजयी नहीं हो पाई, और सत्ता कांग्रेस के हाथ आई जिसके फलस्वरूप पूंजी का राज़ क़ायम हुआ. शोषण-उत्पीड़न का खूनी पहिया, पहले की तरह ही चल रहा है. देश में कंगाली, बेरोज़गारी और मंहगाई व्याप्त हो चुकी है.

आज़ादी आंदोलन की तीसरी धारा, हिन्दू महासभा, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ वाली थी जिसके वारिस, आज दिल्ली की सत्ता में बैठे हैं, और सत्ता के नशे में पूरी तरह गाफ़िल हैं. इस धारा का इतिहास तो बहुत ही शर्मनाक है. इन लोगों ने तो अंग्रेज़ों की मुखबरी की, दलाली की. उनके 'वीर' ने तो अंग्रेज़ों से पांच-पांच बार माफ़ी मांगी, उनकी पेंसन खाई और उनकी ताबेदारी की. ऐसे शर्मनाक इतिहास वाली, ये भगवा ज़मात, आज, किस मुंह से, देशभक्ति के सर्टिफिकेट बांट रही है. मूर्ति अनावरण और सभा के बाद, कई सौ मज़दूरों के जत्थे ने जिसमें, 'दुर्गा भाभी महिला मोर्चा' के बैनर तले, बड़ी तादाद में महिलाओं ने, पूरी बस्ती में, नाहर के साथ आखरी छोर तक मोर्चा निकाला और शहीद-ए-आज़म भगतसिंह के सपनों को साकार करने का अहद लिया. देर शाम निकले इस मोर्चे में गूंजने वाले नारे थे- भगतसिंह के सपनों को मंज़िल तक पहुंचाएंगे; भगतसिंह तुम ज़िंदा हो- हम सब के अरमानों में; भगतसिंह की राह चलो- संघर्षों की राह चुनो; रोज़ी रोटी दे ना सके जो- वो सरकार बदलनी है; इंकलाब जिंदाबाद-जिंदाबाद जिंदाबाद; साम्राज्यवाद का नाश हो- नाश हो नाश हो; जात धर्म में नहीं बटेंगे ङ्क मिलजुलकर संघर्ष करेंगे; ज़ुल्म देखकर आंख मूंदना - है हमको मंज़ूर नहीं; गोरे शासक हारे थे - भूरे शासक भी हारेंगे; पूंजीवाद हो बर्बाद - हो बर्बाद, हो बर्बाद; हर ज़ोर ज़ुल्म की टक्कर में- संघर्ष हमारा नारा है; पहले भी हम जीते थे - आगे भी हम जीतेंगे; मार्क्सवाद लेनिनवाद जिंदाबाद - जिंदाबाद जिंदाबाद; मज़दूर एकता जिंदाबाद- जिंदाबाद जिंदाबाद; फासीवाद पे हल्ला बोल- हल्ला बोल, हल्ला बोल; आज़ादी की क्रांतिकारी विरासत जिंदाबाद- जिंदाबाद जिंदाबाद; भगतसिंह के विचारों को - घर घर तक पहुंचाना है; लड़के लेंगे अपने हक़ - भूलो मत भूलो मत; युवा रक्त की गर्मी से- बर्फ़ की घाटी पिघलेगी; ये सन्नाटा टूटेगा- नई राह अब निकलेगी।

'नफरत की कांग्रेसी दुकान' की देन है उदय भान का बयान: डॉ. चौहान

कांग्रेस अध्यक्ष पर लगाया बदजुबानी की हदें पार करने का आरोप, अपनों की करनी पर चुप्पी

करनाल। हरियाणा कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष उदयभान द्वारा प्रधानमंत्री नरेद्र मोदी और मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर पर की गई टिप्पणी से नाराज हरियाणा भाजपा ने कड़ी आपत्ति जताते हुए उनकी निंदा की है। पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता डॉ. वीरेंद्र सिंह चौहान ने उदयभान को हरियाणा कांग्रेस का कठपुतली प्रधान और उनके बयान को नासमझीपूर्ण बताते हुए कहा कि उन्हें देश और प्रदेश की जनता से माफी मांगनी चाहिए।

डॉ. चौहान ने कहा कि कांग्रेस के शिखर नेतृत्व को चाहिए कि वह उदयभान को भविष्य में अपनी जुबान पर संयम व अंकुश लगाने की सलाह दे।

बीते दिनों पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री रणदीप सिंह सुरजेवाला ने भाजपा को वोट देने वाले लाखों हरियाणवी मतदाताओं को राक्षसी प्रवृत्ति वाला कहा था। यह नफरत से भरा हुआ बयान कांग्रेस की नकली मोहब्बत वाली दुकान के एक ऐसे सेल्स बॉय ने दिया था जो गांधी खानदान के प्रियतम लोगों में से एक है। हरियाणा के लोग कभी नहीं भूलेंगे कि सुरजेवाला को दंडित करने के बजाय सोनिया गांधी और खड़गे ने पार्टी में उनका दर्जा बढ़ा दिया था। आरोप लगाया कि कांग्रेस के नेताओं की बदजुबानी का स्रोत इसके केंद्रीय नेताओं

भाजपा प्रदेश प्रवक्ता डॉ. वीरेंद्र सिंह चौहान

में तलाशा जा सकता है। राहुल गांधी और कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे शायद ही समझ पाएं कि उदयभान की जुबान क्यों कितनी घृणित शब्दावली इस्तेमाल कर रही है। मगर पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा अच्छी तरह जानते हैं कि उदयभान का बयान असंसदीय और खुद उनकी पार्टी की छवि को चोट पहुंचाने वाला है। उन्होंने उम्मीद जताई कि भूपेंद्र सिंह हुड्डा खुद आगे आकर उदय भान की चूक के लिए क्षमा याचना करेंगे।

डॉ. वीरेंद्र चौहान को कांग्रेसियों से क्षमा मांगने की उम्मीद करने से पहले यह उम्मीद भी करनी चाहिए कि संसदीय मर्यादा को कुचलने वाले उनकी पार्टी के सांसद रमेश बिधुड़ी के बसपा सांसद दानिश अली पर अभद्र टिप्पणी करने के लिए प्रधानमंत्री और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा पूरे देश से क्षमा मांगेगे। लोकसभा अध्यक्ष रमेश बिधूड़ी के खिलाफ सख्त कार्रवाई करेंगे। चौहान साहब को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से भी उनके बयान कांग्रेसी विधवा, जर्सी गाय, पचास लाख की गर्ल फ्रेंड के लिए माफी मांगने की मांग करनी चाहिए।

गोली मारो..... जैसे बयान देने वाले केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर से भी उन्हें उम्मीद करनी चाहिए कि वे देश से माफी मांगें।

अंतरराष्ट्रीय महिला पहलवानों की जो दुर्दशा मोदी ने की है उसके लिए भाजपाई माफी कब मांगेंगे चौहान जी। दूसरों पर कीचड़ उछालने वाले भाजपाइयों को अपने ऊपर बात आने पर सारी मर्यादाएं नजर आने लगती हैं। यदि भाजपाइयों को अपनी इज्जत करानी है तो उन्हें दूसरों को इज्जत देनी भी सीखनी होगी। उन्होंने ही राजनीति को इतनी गर्त में पहुंचा दिया है कि सभी पार्टियां जैसे को तैसा के सिद्धांत पर उतर आई हैं।

नितिन गडकरी ने अवैध मैट्रो कैंसर.....

पेज एक का शेष

मानकों का पालन कराना, सर्जरी में निकाले गए ऊतक, अंग आदि की जांच, संरक्षण और निस्तारण की प्रक्रिया मानक के अनुरूप हो रही है या नहीं सहित स्थायी विशेषज्ञ चिकित्सिकों की तैनाती, कैंसर के इलाज में पारंगत नर्सिंग और पैरामेडिकल स्टाफ की पर्याप्त संख्या सहित अन्य महत्वपूर्ण मानक तय होने के बाद ही स्वास्थ्य विभाग की ओर से एनओसी जारी की जाती है। बताते चलें कि मेट्रो अस्पताल में अधिकतर कैंसर विशेषज्ञ विजिट पर ही आते हैं, जबकि कैंसर इंस्टीट्यूट चलाने के लिए कम से कम तीन स्थायी विशेषज्ञ डॉक्टर होने चाहिए। उन्होंने इसकी शिकायत एसडीएम फरीदाबाद से की थी। एसडीएम के आदेश पर सीएमओ ने इसकी जांच के लिए डिप्टी सीएमओ डॉ. रामभगत की अध्यक्षता में एक कमेटी का गठन किया है। हालांकि, इस संबंध में डिप्टी सीएमओ डॉ. रामभगत ने कुछ भी बताने से इनकार करते हुए कहा कि आरटीआई डाल दो, उसमें आपको जवाब दिया जाएगा। सीएमओ/नोडल अधिकारी क्लीनिकल एस्टेब्लिशमेंट एक्ट कार्यालय से मिले आरटीआई के जवाब में स्पष्ट किया गया है कि मैट्रो हास्पिटल के कैंसर कैंसर ब्लॉक को क्लीनिकल एस्टेब्लिशमेंट के तहत कोई सर्टिफिकेट जारी नहीं किया गया है।

नियम ताक पर रख कर बनाए गए कैंसर इंस्टीट्यूट की शिकायत होने पर स्टेट एन्वायरनमेंट इंपैक्ट असेसमेंट अथॉरिटी, हरियाणा, (एसईआईएए) पंचकूला के चेयरमैन समीरपाल सरो ने 21 जून 2023 को एक कमेटी गठित कर दस दिन में इसकी रिपोर्ट तलब की थी। सितंबर खत्म होने को है कमेटी रिपोर्ट नहीं दे सकी है। दरअसल, अस्पताल के मालिक हकीकत जानते हैं इसलिए कमेटी के सामने न तो पेश हो रहे हैं और न ही जवाब दे रहे हैं। तीन महीने बाद भी कमेटी रिपोर्ट नहीं तैयार कर पाई है तो समझा जा सकता है कि उसके सदस्य भी कितने मुस्तैद हैं।

इतने सारे लूप होल होने के बावजूद केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी का मेट्रो कैंसर इंस्टीट्यूट का उद्घाटन करना उनकी नीयत और ईमानदारी पर सवाल खड़े करता है। होता तो यह है कि कोई कद्दावर केंद्रीय मंत्री किसी संस्थान के उद्घाटन की सहमति तब देता है जब उसके अधिकारी यह परख लेते हैं कि संस्थान सभी नियम कानूनों का पालन करके बनाया गया है और सभी संबंधित विभागों से उसे एनओसी मिली हुई है। ऐसा नहीं हो सकता कि अधिकारियों ने यह सब जांचा नहीं हो और मंत्री को इससे अवगत न कराया हो। यदि अधिकारियों ने ऐसा नहीं किया तो गडकरी को चाहिए कि उनके खिलाफ कार्रवाई करें। अगर जानकारी होने के बावजूद नितिन गडकरी ने उद्घाटन किया तो उनकी कौन सी मजबूरी थी कि उन्हें ऐसा करना पड़ा। महज नौ साल में देश की सबसे अमीर पार्टी बनी भाजपा का खजाना कहीं ऐसे ही उद्घाटनों के कारण तो नहीं बढ़ रहा है।

एनजीटी का फंदा भी कसा

बिना सीटीई और सीटीओ लिए ही कैंसर इंस्टीट्यूट चला रहे मैट्रो अस्पताल के मालिकों पर एनजीटी का फंदा भी कस गया है। शहर के आलोक कुमार ने 27 सितंबर को नेशनल ग्रीन ट्रिब्युनल में मैट्रो कैंसर इंस्टीट्यूट के खिलाफ अर्जी लगाई। अर्जी के अनुसार मैट्रो अस्पताल प्रबंधन ने प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से सीटीई नहीं मिलने के बावजूद कैंसर यूनिट बना डाली और बिना सीटीओ हासिल किए इस यूनिट का संचालन भी शुरू कर दिया। यह भी आरोप लगाया कि उन्होंने इसकी शिकायत हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (एचएसपीसीबी) से की लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। एनजीटी कोर्ट एक के जस्टिस प्रकाश श्रीवास्तव और एक्सपर्ट सदस्य डॉ. ए सेंथिल वेल ने एचएसपीसीबी के सदस्य सचिव प्रदीप कुमार को मामले में तुर्त फुर्त नियमानुसार कार्रवाई करने का आदेश जारी किया है।

पार्टी विद डिफरेंस के नेताओं में ....

पेज एक का शेष

से बाहर का रास्ता दिखा दिया गया था। तिगांव से भाजपा विधायक बने राजेश नागर ने अपने क्षेत्र में विकास कार्य कराने चाहे तो नहर पार इलाके में जमीन का बेनामी खेल खेल रहे किशन पाल गूजर के हित उनसे टकराए। किशनपाल को राजेश नागर में दूसरा गूजर नेता उभरते दिखा तो उन्होंने अपनी ही पार्टी के विधायक की काट शुरू कर दी। तिगांव के पूर्व कांग्रेसी विधायक ललित नागर को अपनी गोद में बैठा लिया। ललित नागर ने भी अपने बेटे की शादी में किशन पाल गूजर को परिवार का ज्येष्ठ सदस्य बताते हुए बेटे के ससुरालियों से मोटा सगुन दिलवाया। प्रगाढ़ता यहां तक पहुंची कि किशनपाल गूजर के लिए जमीनों के धंधे में ललित नागर जुड़ गया। अपनी ही पार्टी के केंद्रीय मंत्री द्वारा विपक्षी नेता को तरजीह दिए जाने से आहत विधायक राजेश नागर ने भी बगावती तेवर दिखाने शुरू किए। रिवाजपुर में प्रदर्शनकारियों को उनकी मांगे माने जाने की बात पहले ही बता कर केंद्रीय मंत्री के समारोहपूर्वक घोषणा करने की योजना को चौपट कर दिया।

सोमवार को राजेश नागर केंद्रीय सड़क मंत्री नितिन गडकरी से मिले और मंझावली पुल जल्द पूरा कराने की मांग कर डाली। बताते चलें कि यह पुल किशन पाल गूजर का ड्रीम प्रोजेक्ट है, राजेश नागर ने नितिन गडकरी से इसे पूरा कराने की मांग कर किशन पाल गूजर के ड्रीम प्रोजेक्ट को छीनने का प्रयास किया है।

किशनपाल गूजर खुद तो नितिन गडकरी से न तो मिलने पहुंचे और न ही उनकी समर्थक बड़खल विधायक सीमा त्रिखा, फरीदाबाद विधायक नरेंद्र गुप्ता और मंत्री मूलचंद शर्मा। केंद्र के कद्दावर नेता की स्थानीय नेताओं द्वारा इस कदर अनदेखी किया जाना मोदी की भाजपा में ऊपर से लेकर नीचे तक विरोधाभास और गुटबंदी का खुला प्रदर्शन है।

बयान हल्फिया

मैं, कलावती देवी पत्नी श्री जवाहर पासवान निवासी मकान न0 382, गली न0. 3, दुर्गा कालोनी, करनाल की रहने वाली हूँ ओर अपने हल्फ से निम्नलिखित ब्यान करती हूँ कि

1. यह है कि मैं उपरोक्त पते का स्थाई निवासी हूँ।
2. यह है कि मेरे लड़के रणजीत पासवान की मृत्यु हो चुकी है।
3. यह है कि मेरे लडके रणजीत पासवान की पत्नी सीता देवी व उनके बच्चे आरती, पूजा, राहुल, और रोहित को मैं अपनी चल-अचल सम्पति से बेदखल करती हूँ।
4. यह है कि अगर भविष्य में मेरी लड़के रणजीत पासवान की पत्नी सीता देवी व उसके बच्चे आरती, पूजा, राहुल, और रोहित कोई भी किसी भी प्रकार का लेन देन करते है तो वह स्वयं इसके जिम्मेवार होगें तथा उनके लिए मेरी किसी भी प्रकार की कोई जिम्मेवारी नही होगी।
5. यह है कि उपरोक्त ब्यान सही व दुरूस्त है।

तसदीक शपथकर्ता : तसदीक की जाती है कि उपरोक्त ब्यान सही व दुरूस्त है इसमें किसी भी प्रकार का कोई भेद नहीं छिपाया गया है।

शपथकर्ता